Dr Anita Singh

10

50

प्रज्ञान

PRAJÑĀNA

(A Peer Reviewed Journal)

Volume : 6-8 Issue : 3/2015-16 ISSN : 2278-1609

Km. Mayawati Government Girls Post Graducate College
Badalpur, Gautambudha Nagar (U.P.) - 203 207

भारतीय संस्कृति के विकास में बौद्ध धर्म का योगदान

डॉ. अनीता सिंह
एसो. प्रो. इतिहास विभाग
कु. मा. रा. म. स्ना. महाविद्यालय
बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

छठी शताब्दी ई.पू. में धर्मसुधार आन्दोलन के परिणाम स्वरूप जिन नवीन धर्मों का उदय और विकास हुआ, उनमें सबसे प्रमुख बौद्ध धर्म है। बौद्ध धर्म ने भारतीय समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन, साहित्य और कला को प्रभावित किया। इस शोध पत्र में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों के निर्माण एवम् विकास में बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण योगदान पर चर्चा की है।

भारतीय संस्कृति में धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतवर्ष अनेक धर्मों तथा सम्प्रदायों की क्रीड़ास्थली रही। धार्मिक सहिष्णुता का जो आदर्श हमें यहाँ देखने को मिलता है वह विश्व की किसी अन्य संस्कृति में दुर्लभ है। प्रत्येक धर्म ने भारतीय संस्कृति के निर्माण में अपना-अपना योगदान दिया है। बौद्ध धर्म प्रमुख धर्मों में से एक है। भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों के निर्माण एवम् विकास में बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

छठी शताब्दी ई.पू. में धार्मिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप बौद्ध धर्म का उदय हुआ। गौतम बुद्ध, बौद्ध धर्म के संस्थापक का जन्म 563 ई.पू. में कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी वन में हुआ था। उन्होंने अपने विचारों से तत्कालीन समाज को गम्भीर रूप से प्रभावित किया। उन्होंने मनुष्य की श्रेष्ठता को जन्म के आधार पर न मानकर कर्म से माना। वर्णव्यवस्था को अस्वीकार कर सभी व्यक्ति को समान स्तर पर लाये। स्त्रियों को भी समानता का अधिकार दिया। उन्हें बौद्ध संघ में प्रवेश की अनुमति भी दे दी गयी। यह बौद्ध धर्म का ही प्रभाव था कि वैष्णव सतों ने भी जाति प्रथा का विरोध किया।

बौद्ध धर्म ने ही सर्वप्रथम भारतीयों को एक सरल तथा आडम्बर रहित धर्म प्रदान किया जिसका अनुसरण राजा-रंक सभी कर सकते थे। बौद्ध धर्म ने वेदों की प्रमाणिकता और वैदिक कालीन यज्ञ व कर्मकाण्डों को अस्वीकार करके संयम अहिंसात्मक का आधार माना। पुराहितों और वेदों की अधिसत्ता समाप्त कर दी। अब कोई भी व्यक्ति बुद्ध के मार्ग पर चलते हुए स्वयं ही निर्वाण प्राप्त कर सकता था, उसके लिए पुरोहितों की आवश्यकता नहीं थी। निर्वाण प्राप्ति भी यज्ञ एवम् बलि द्वारा नहीं बल्कि सदाचारी जीवन व्यतीत करने में ही प्राप्त हो सकता था। उन्होंने अहिंसात्मक जीवन व नैतिक आधार विचार को ही मोक्ष का आधार माना।

बौद्ध धर्म ने भारतीय जनमानस को सर्वप्रिय धर्म प्रदान किया, जिसमें सदाचार, नैतिकता, जन-सेवा, स्वार्थ और त्याग के उच्च आदर्शों पर अधिक जोर दिया गया। बौद्ध धर्म के महायान मतावलम्बियों ने बोधसत्व के रूप में जन सेवा का श्रेष्ठ आदर्श लोगों के सम्मुख रखा। वे अपनी मुक्ति की चिन्ता न करके, अपना ध्यान दूसरों के दुःखों के निवारण हेतु लगाते थे। बोधिसत्व के इस आदर्श ने एक ओर बौद्ध धर्म के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया तो दूसरी ओर हिन्दू धर्म को भी अत्यधिक प्रभावित किया।

बौद्ध धर्म के सिद्धान्त, विचार और नैतिकता की गहरी छाप कालांतर में हिन्दू धर्म पर पड़ी। अहिंसा एवम् सहिष्णुता पर बौद्धो ने जोर दिया। अशोक, कनिष्ठ, हर्ष आदि राजाओं में जो धार्मिक सहिष्णुता देखने को मिलती है, वह बौद्ध धर्म के प्रभाव का ही परिणाम थी। अशोक ने अपने कार्यो का क्षेत्र अधिक विस्तृत कर लिया एवम् मानवों तथा पशुओं, दोनों के लिए निःशुल्क औषद्यालय खोल दिये। ऐसा प्रतीत होता है कि पिंजरापोल, गौशाला तथा अन्नक्षेत्र जैसी संस्थाओ का जो आधुनिक हिन्दू दानशीलता की प्रमुख विशेषताएँ हैं, इनका उद्भव अशोक के निःशुल्क औषधालयों और दान क्षेत्रों से हुआ। अशोक ने युद्ध विजय की नीति का परित्याग कर धर्म विजय की नीति को अपनाया तथा लोक कल्याण का आदर्श समस्त विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया।

अहिंसा के जिस सिद्धान्त पर बौद्धो ने जोर दिया, उसे ब्राह्मणो ने भी प्राणी मात्र पर दया रखने का

ISSN : 2278-1609

Scanned by CamScanner